व्यंग्य

दो दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद

- इशरत खान

अध्यक्ष, हिंदी विभाग
गोवा विश्वविद्यालय
गोवा-403206

हिंदी विभाग गोवा विश्वविद्यालय एवं अरविंद पाण्डेय मंच, गोवा के संयुक्त तत्त्वावधान में 16-17 फरवरी 2012 को दो दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन किया गया।

16 फरवरी 2012 की प्रातः दो दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद का उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ। उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष प्रो. दिलीप देवबागकर (कुलगुरु, गोवा विश्वविद्यालय), मुख्य वक्ता शिवमूर्ति (हिंदी कथाकार, लखनऊ) एवं विषय प्रवर्तक प्रो. बी. के शर्मा रोहिताश्व (हिंदी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय) आदि मंच पर उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने दीप प्रज्वलित कर मां सरस्वती एवं स्वर्गीय डॉ. अरविंद पांडेय की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। एम. ए. द्वितीय वर्ष के छात्र श्री. उदेश एवं एम. ए. प्रथम वर्ष की छात्राओं ने क्रमशः सरस्वती वंदना एवं स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

समारोह के अध्यक्ष, गोवा विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. दिलीप देवबागकर ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कथ्य की अपेक्षा शिल्प को महत्त्व देते हुए कहा, "विषय में बदलाव नहीं आता है बल्कि शिल्प में बदलाव आता रहता है। समकालीन कहानी में समकालीन स्थितियों की बात करना जरूरी है। कहानीकार को अपनी रचना में अपना अस्तित्व अपनी शैली बनाए रखनी चाहिए।" आगे उन्होंने कहा, "हर युग में कहानी का कथ्य वही रहता है केवल उसका माध्यम बदल जाता है।" संगोष्ठी के प्रमुख वक्ता शिवमूर्ति ने अपने वक्तव्य में राजेंद्र यादव, मोहन राकेश, कमलेश्वर आदि की कहानियों की चर्चा की जो समकालीन हिंदी कहानी में मील के पत्थर हैं। प्रो. बी. के शर्मा (प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय) ने अतिथियों का परिचय देते हुए परिसंवाद के विषय 'समकालीन हिंदी कहानी कथ्य एवं शिल्प' का महत्त्व रेखांकित करते हुए विषय प्रवर्तन किया। हिंदी विभाग की अध्यक्षा प्रो. इशरत बी. खान ने प्रो. दिलीप देवबागकर (अध्यक्ष), श्री. शिवमूर्ति (प्रमुख वक्ता), प्रो. रोहिताश्व (विषय-प्रवर्तक) तथा सभागार में उपस्थित सभी हिंदी प्रेमियों का स्वागत किया। डॉ. वृषाली मांद्रेकर (एसोसिएट प्रोफेसर, गोवा विश्वविद्यालय) ने आभार व्यक्त किया एवं संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र का संचालन का कार्य संपन्न किया।

उक्त संगोष्ठी चार सत्रों में संपन्न हुई। संगोष्ठी का प्रथम सत्र 'समकालीन हिंदी कहानी सैद्धांतिक विवेचन' विषय से संबंधित था। सत्र के अध्यक्ष श्री. शिवमूर्ति थे. इस सत्र

में दो प्रपत्र प्रस्तुत किए गए। प्रथम प्रपत्र मधु कांकरिया (हिंदी कथाकार, चेन्नई) ने हिंदी कहानी की विकास-यात्रा विषय पर प्रस्तुत किया। प्रो. रोहिताश्व का विषय था- 'समकालीन हिंदी कहानी: शिल्प विधान।' उन्होंने कहानी के कथ्य के साथ ही उसके शिल्प के महत्त्व को रेखांकित किया। इसके पश्चात अध्यक्षीय वक्तव्य हुआ। प्रथम सत्र का संचालन डॉ. किरन पोपकर ने किया तथा श्रीमती आशा गहलोत ने आभार व्यक्त किया।

द्वितीय सत्र का विषय था 'समकालीन हिंदी कहानी: विधि विमर्श'। इस सत्र की अध्यक्षता हिंदी कथाकार मधु कांकरिया ने की। इसमें प्रो. प्रतिभा मुद्लियार (मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर) ने 'समकालीन हिंदी कहानी: स्त्री विमर्श', प्रो. इशरत खान (गोवा) ने 'समकालीन हिंदी कहानी: युवा विमर्श, श्री. संदीप लोटलीकर (गोवा) ने 'इक्कीसवीं सदी की कहानियों में तनाव' तथा डॉ. अवधेश मिश्र (लखनऊ) ने 'समकालीन हिंदी कहानी में सांप्रदायिकता' विषय पर प्रपत्र किए। इसके पश्चात अध्यक्षीय टिप्पणी की गई। इस सत्र का संचालन करते हुए श्रीमती जयश्री राय (गोवा) ने आभार व्यक्त किया।

तृतीय सत्र का विषय था- 'समकालीन हिंदी कहानीकार।' इस सत्र के अध्यक्ष प्रो. बी. के. शर्मा रोहिताश्व थे। इस सत्र में कुल सात प्रपत्र प्रस्तुत किए गए। डॉ. अमरीश सिन्हा (मुंबई) ने 'नासिरा शर्मा का कहानी साहित्य', डॉ. वृषाली मांद्रेकर (गोवा) ने 'समकालीन कहानीकार', श्रीमती आशा गहलोत (गोवा) ने 'उदय प्रकाश की कहानियों का अनुशीलन', श्रीमती अमृता डिंगे (गोवा) ने 'अल्का सरागवी की कहानियों में मूल्य चेतमा', उमा प्रियोळकार (गोवा) ने 'संजीव का कहानी साहित्य: कथ्य एवं शिल्प' तथा डॉ. किरन पोपकर (गोवा) ने 'राजी शेठ का कहानी-साहित्य' विषय पर अपने-अपने प्रपत्र प्रस्तुत किए। अध्यक्षीय वक्तव्य के साथ सत्र समाप्त हुआ। इस सत्र का संचालन एवं आभार सपना सावईकर ने संपन्न किया।

भोजन के पश्चात चतुर्थ सत्र प्रारंभ हुआ। इस सत्र का विषय (शोध विषय) से संबंधित था। इस संगोष्ठी की सबसे बड़ी उपलब्धि थी, इसमें तीन शोध विद्यार्थियों ने अपने शोध विषय से संबंधित प्रपत्र प्रस्तुत किए। मोहम्मद रफी (शोध छात्र, हिंदी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय) ने 'समकालीन दलित क़हानी', कु. सपना सावईकर (शोध छात्रा, हिंदी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय) ने 'कहानीकार सूर्यबाला' तथा श्रीमती रंजीता परब (शोध छात्रा, हिंदी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय) ने 'मधु कांकरिया की कहानियों में कथ्य एवं शिल्प'/विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता, प्रो. इशरत खान ने सभी शोध विद्यार्थियों को अच्छा प्रपत्र प्रस्तुत करने के लिए बधाई दी।

संगोष्ठी का अंतिम कार्यक्रम समापन समारोह था। इस अवसर पर उक्त संगोष्ठी के विषय में एम. ए. प्रथम की छात्रा कु. माधुरी पाटील, द्वितीय वर्ष की छात्रा कु. स्नेहा, डॉ. रमीता गुरव (गोवा) तथा डॉ. अवधेश मिश्र (लखनऊ) ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। इस सत्र के विशिष्ट अतिथि श्री. मोहनदास सुर्लकर (कार्याध्यक्ष गोमंतक राष्ट्रभाषा विद्यापीठ, मडगांव) थे. उन्होंने कहानी के महत्त्व को रेखांकित करते हुए कहा, "कहानी आकार में छोटी होने के कारण पाठकों को अधिक आकर्षित करती है।" समापन समारोह के अध्यक्ष श्री शिवमूर्ति ने विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दिया तथा संगोष्ठी की सफलता पर आयोजकों को बधाई दी। हिंदी विभागाध्यक्षा प्रो. इशरत बी. खान ने परिसंवाद को सफल बनाने में जिन-जिन लोगों ने सहयोग प्रदान किया, उन सबके प्रति आभार व्यक्त किया। समापन समारोह का संचालन डॉ. ब्रिजपाल गहलोत (गोवा) ने किया। ❑